सखि मोर पिआ ।
अबहु न आएल कुलिस-हिआ ।।
नखर खेओओलहुँ दिन लिखि-लिखि । नयन ऑधाओलहुँ पिआपथ देखि
जब हम बाला परिहरि गेला ।
किए दोस गुन बुझिओ न भेला ।।
अब हम तरुनि बुझब रस-भास ।
हेन जन नहि जे कहत पिआपास ।।
आब ऐहन करि पिआ मोर गेला ।
पुरबक जत गुन बिसरित भेला ।।
भनइ विद्यापति सुन अब राई ।
कानु समुझाबइते अब चलि जाई ।।

– हे सखि, मेरे प्रियतम अभी भी नहीं आए, वे वज्र-हृदय हैं।
दिन की गणना (लिख-लिखकर) करते हुए मैंने नख घिस लिए। प्रियतम के रास्ते को देखते-देखते मैं ने ऑखें आंधी बना ली।
जब हम बाला थी उसी समय वे मुझे छोड़कर गए थे। (उनके संग में) क्या दोष है, क्या गुण है, यह मैं समझ भी नहीं पाई थी।
अब मैं तरुणी हो गयी हूँ। अब रस की बातें समझूँगी। ऐसे कोई नहीं है जो प्रियतम के पास की - प्रियतम की कुशल-वार्ता - मुझसे कहे।
अब मेरे स्वामी ऐसा करके चले गए हैं। पूर्व के जो भी गुण थे सबों को भूल गए हैं।
विद्यापति कहते हैं कि हे राधा, सुनो, अब कृष्ण को समझाने के लिए (स्वयं) चली जाओ।

आसक लता लगाओलि सजनी,
नयनक नीर पटाए।
से फल अब तरुनत भेल सजनी,
आँचर तर न समाए ॥२॥
काँच साँच पहु देखि गेल सजनी,
तसु मन भेल कुह (?) भान।
दिन-दिन फल तरुनत भेल सजनी,
अहुखन न करु गेआन ॥४॥
सबकर पहु परदेस बसि सजनी,
सिरल सुमिरि सिनेह।
हमर एहन पति निरदय सजनी,
नहि मन बाढ़ए नेह ॥६॥
सुकवि विद्यापति गाओल सजनी,
उचित आओत गुन साइ।
उठि बधाव मन भरि सजनी,
अब आओत घर नाह ॥३॥

हे सखी। मैंने आशा की लता लगाई और उसे नयनों के जल से पटाया। वह फल (स्तन) अब तरुणाई को प्राप्त कर गया। अंचल में भी नहीं समाता।

हे सखी! मेरे स्वामी कच्ची-सांचा (बाल्यावस्था का फल) देखकर गए थे।

उनके मन में इसीसे निराशा हो गई थी।

अब यह फल दिनानुदिन तरुण हो गया अभी भी (मेरे स्वामी को) ज्ञान नहीं होता - अभी भी उनकी आँखें नहीं खुलती।

सबों के पति परदेश बसकर भी प्रेम का स्मरण कर (अपनी प्रियतमा के पास) आए हैं। (किंतु) मेरे पति ऐसे निर्दय हैं, कि उनके मन में (जरा भी) स्नेह नहीं जगता।

बलराम कुमार

डॉ. बलराम कुमार
हिन्दी विभाग
डॉ. एल.के.वी.डी. कॉलेज ताजपुर
समस्तीपुर

Scanned with CamScanner